JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

16वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान वैधानिकता के स्रोत के रूप में महिलाओं की भूमिका: सिख, मराठा और मुगलों का ऐतिहासिक अध्ययन

Chandrajit Singh
Post Graduate
Department of History, Faculty of Social Science, University of Delhi

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में 16वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान वैधानिकता के स्रोत के रूप में महिलाओं को केंद्र में रखकर अध्ययन किया गया है। जिसमें प्राथमिक स्रोत के रूप में मुख्य रूप से गुलाबदन बेगम की कृति हुमायुनामा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दासबोध का अध्ययन शामिल है तथा संबंधित विषय के द्वितीयक स्रोत का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र में मुगल शासन में गुलबदन बेगम, नूरजहां, जहां आरा इत्यादि तो वही मराठा साम्राज्य के निर्माण और स्थायित्व में माता जीजाबाई की भूमिका तथा सिख परंपरा में बीबी नानकी, माता खिवी, बीबी भानी, सरदारनी सदा कौर एवं माता गुजरी के माध्यम से वैधानिकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: वैधानिकता, मुगल, हरम, गुलबदन बेगम, नूरजहां, जहां आरा, मराठा, जीजाबाई, बीबी नानकी, माता खिवी, बीबी भानी, सरदारनी सदा कौर, माता गुजरी इत्यादि

परिचय

विद्वान और इतिहासकार सदियों से मुगल साम्राज्य से मोहित रहे हैं। 16वीं से 19वीं शताब्दी ईस्वी तक चले इस साम्राज्य ने न केवल मध्यकालीन भारतीय इतिहास बल्कि आधुनिक भारत पर भी एक शक्तिशाली प्रभाव छोड़ा है। मुगल भारत में महिलाओं की स्थिति बहुत रुचि और महत्व का विषय है, क्योंकि यह मुगल महिलाओं की स्थिति और भूमिकाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। मुगल भारत में महिलाओं की स्थिति को समझने का एक प्रमुख पहलू उनके वंश की जांच करना है, जिसने उनके समाज को प्रभावित किया। अध्ययन किया गया है, जिसमें उनके प्रभाव, शक्ति और उनके द्वारा प्राप्त सम्मान के स्तर पर प्रकाश डाला गया है। मुग़ल साम्राज्य की स्थापना तुर्की और मंगोल दोनों साम्राज्यों के वंशज बाबर ने की थी। बाबर की मां कुतलुग निगार खानम ने उसके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने उसके चरित्र को प्रभावित किया और प्रदर्शित किया कि मुगल वंश की महिलाएँ केवल निष्क्रिय व्यक्ति नहीं थीं, बल्कि वे अपना प्रभाव डालने और इतिहास को आकार देने में भी सक्षम थीं। मुगल काल के दौरान महिलाओं के पहलुओं पर बहुत सारे शोध पत्र लिखे गए हैं। एंगबिन यास्मीन, रूबी लाल और शादाब बानो जैसे विद्वानों ने, बस कुछ नाम बताने के लिए, लिखा है। साक्षरता, संपत्ति के अधिकार, शासनकाल, हरम आदि पर विस्तार से चर्चा करते हुए, मुगल काल के दौरान संपत्ति की विरासत के संदर्भ में, शादाब बानी की कृति वुमेन एंड प्रॉपर्टी इन मुगल इंडिया महिलाओं और संपत्ति के बीच संबंध को समझती है। सैद्धांतिक रूप से, महिलाएं संपत्ति की हकदार थीं और उन्हें संपत्ति के वैध उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाता था। सिख धर्म ने हिंदू समाज द्वारा पुरुष और महिलाओं के बीच खड़ी की गई असमान बाधाओं को ध्वस्त करके हिंदू धर्म से एक क्रांतिकारी बदलाव किया। सिख गुरुओं ने एक स्वस्थ, समतावादी और प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी। उन्होंने सामाजिक संबंधों के एकमात्र सच्चे आधार के रूप में सार्वभौमिक समानता और भाईचारे के सिद्धांतों की वकालत की। समानता की सिख अवधारणा जाति, पंथ, लिंग और रंग के संकीर्ण विचारों से परे थी। सिख गुरुओं ने जीवन के हर क्षेत्र में महिला को पुरुष के बराबर माना। सिख धर्म विश्व के सबसे युवा धर्मों में से एक है। यह गुरु-सिख (शिक्षक-शिष्य) रिश्ते पर केंद्रित है, जिसे पवित्र माना जाता है। सिख धर्म का विकास एक सामाजिक-धार्मिक आंदोलन की एक उल्लेखनीय कहानी है जो दस मानव गुरुओं के नेतृत्व में पंजाब में एक सुसंगठित शक्ति के रूप में विकसित हुआ। उत्तरी भारत में अवधारित इस विश्वास प्रणाली ने मध्ययुगीन युग के संदर्भ में

सार्वभौमिकता, उदारवाद, मानवतावाद और बहुलवाद के मूल्यों का प्रचार और प्रसार किया। गुरु गोबिंद सिंह ने महिलाओं और पुरुषों दोनों को कृपाण का विशेषाधिकार दिया। महिलाओं ने शीघ्र ही प्रदर्शित कर दिया कि वे आध्यात्मिकता और तलवार चलाने में पुरुषों के बराबर हैं। वैधानिकता के स्त्रोत के रूप में मराठी महिलाओं में सबसे ऊपर नाम जीजाबाई का आता है। जीजाबाई छत्रपति शिवाजी की माँ थीं, जब शिवाजी 14 वर्ष के थे, तब शिवाजी के पिता शाहजी राजे ने उन्हें पुणे की जागीर सौंप दी थी। बेशक, जागीर के प्रबंधन की जिम्मेदारी जीजाबाई पर आ गई। जीजाबाई और शिवाजी कुशल अधिकारियों के साथ पुणे पहुंचे। निज़ामशाह, आदिलशाह और मुगलों के लगातार स्वार्थ के कारण पुणे की हालत बहुत ख़राब थी।

वैधानिकता के स्त्रोत के रूप में मुगल, सिख और मराठी महिलाओं की भूमिका

मुगल प्रशासन में महिलाएं

मुगल भारत में महिलाओं की स्थिति को समझने का एक प्रमुख पहलू उनके वंश की जांच करना है, जिसने उनके समाज को प्रभावित किया। मुगल साम्राज्य की स्थापना तुर्की और मंगोल दोनों साम्राज्यों के वंशज बाबर ने की थी। बाबर की मां कुतलुग निगार खानम ने उसके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने उसके चरित्र को प्रभावित किया और प्रदर्शित किया कि मुगल वंश की महिलाएँ केवल निष्क्रिय व्यक्ति नहीं थीं, बल्कि वे अपना प्रभाव डालने और इतिहास को आकार देने में भी सक्षम थीं। इसके अलावा, मुगल साम्राज्य में शाही परिवार का विस्तार महिलाओं की शक्ति और एजेंसी द्वारा किया गया था। मुगल वंश के भीतर महिलाओं के प्रभाव के अलावा, साम्राज्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के पास महत्वपूर्ण शक्ति थी। जबकि मुगल साम्राज्य को अक्सर हरम की भव्यता से जोड़ा जाता है, यह उससे कहीं अधिक था। मुगल हरम जटिल आख्यानों, शीर्षकों, शक्ति नाटकों और राजनीति का एक आदर्श प्रतिनिधित्व था, जिसने साम्राज्य को बदल दिया। शायद महिलाओं के पास सबसे अधिक नियंत्रण और शक्ति भी थी, क्योंकि वे ही साम्राज्य का भविष्य संवार रही थीं। सैद्धांतिक रूप से, महिलाएं संपत्ति की हकदार थीं और उन्हें संपत्ति के वैध उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाता था लेकिन व्यवहार में उतना नहीं, मुस्लिम महिलाओं को उनके पतियों द्वारा दहेज के रूप में मेहर प्रदान किया जाता था। पतियों को पत्नी के दहेज को अपने पास रखने की अनुमति नहीं थी और उन्हें इसे किसी भी कीमत पर वापस करना होगा विवाह में या उसके विघटन पर। इन मुस्लिम महिलाओं को उसके विवाह के अवसर पर उसके माता-पिता द्वारा दिया गया उपहार। हालाँकि, शरिया के अनुसार, एक महिला को अपने पुरुष समकक्ष का केवल आधा हिस्सा ही विरासत में मिल सकता है। इसका श्रेय पितृसत्तात्मक प्रकृति को दिया जा सकता है।

लोकप्रिय धारणाओं के विपरीत, मुगल काल में, विशेषकर अकबर के शासनकाल के दौरान, कुलीन महिलाओं ने काफी शक्ति का प्रयोग किया। रफ़ीउद्दीन इब्राहिम शिराज़ी गुलामी और दास व्यापार को खत्म करने के लिए अकबर की ब्राह्मण पत्नी के प्रभाव की बात करते हैं।[1] दिवंगत मुगल साम्राज्य की सबसे प्रभावशाली महिला शख्सियतों में से एक, नूरजहाँ का दरबार पर काफी नियंत्रण था और वह पहली मुगल महिला शासक थीं।[2] नूरजहाँ ने एक महान उदाहरण प्रस्तुत किया जिसे बाद में शाहजहाँ ने अपनी पत्नी और बेटियों के साथ अनुसरण करने का प्रयास किया। बाद में राजकुमारी जहाँआरा की प्रमुख महिला की उपाधि दी गई। वह हरम के साथ-साथ अपने भाइयों की शादियों जैसे घरेलू अनुष्ठानों का भी प्रबंधन करती थी, जिनका स्पष्ट राजनीतिक महत्व था। गुलबदन बेगम, बाबर की बेटी, हुमायूं की बहन और अकबर की चाची, एक महान साहित्यिक विद्वान थीं, जिन्होंने मुगल साम्राज्य की शुरुआत से लेकर अकबर के शासन काल तक देखा था। उसने अपने भतीजे अकबर के अनुरोध पर साम्राज्य के इतिहास के कई महत्वपूर्ण क्षणों को अपने संस्मरणों और हुमायुंनामा में दर्ज किया। वह लगभग पूरी तरह से पुरुषों द्वारा प्रलेखित इतिहास में एक महिला के नए और ताज़ा परिप्रेक्ष्य को सामने लाती है। गुलबदन बेगम अपने बाद की महिलाओं की पीढ़ियों के लिए एक पथप्रदर्शक थी। वह केवल महिलाओं के लिए हज पर जाने वाली पहली महिला थी। अपने संस्मरणों में वह एक महिला होने की चिंताओं और दबावों के बारे में बात करती है।[3] युवा लड़कियों को संगीत ज्ञान, साहित्य, शिष्टाचार, कला आदि में प्रशिक्षित किया गया होगा। यह ज्ञान कई महान महिलाओं के लिए एक अनिवार्य संपत्ति थी, जो शायद घमंड से भी अधिक गंभीरता रखती थी। वैसे, कुलीन महिलाएँ उच्च शिक्षित और अक्सर प्रसिद्ध विद्वान, बुद्धिजीवी और कवियित्री होती थीं। कई महान महिलाओं को भी किताबों से आकर्षण था और उन्होंने व्यापक पुस्तकालय बनाए रखे, अक्सर अन्य विद्वानों को साहित्यिक अनुदान दिया और विश्वविद्यालयों और ऐसे अन्य संस्थानों की स्थापना की। मुस्लिम महिलाओं ने भी कुरान सीखा और पैगंबर के तरीके से शिक्षा प्राप्त की, यह परंपरा आज भी जारी है। गुलबदन बेगम ने बाद में अपने हुमायुनामा में रहस्यवादी पर्व को याद किया, जो मूल रूप से एक महान घटना थी। जिसने तुर्की मंगोल संस्कृति और विरासत के अंतिम अवशेषों का सम्मान किया था। महिला मुगल विद्वानों और बुद्धिजीवियों का मिलना कोई असामान्य

[1] Bano. S (1999). Marriage and Concubinage in the Mughal Imperial Family, Proceedings of the Indian History Congress, 60, pp.353-362.
[2] Ibid., 353-362
[3]Dilip Hiro, & Annette Susannah Beveridge (2006). Babur: Emperor of Hindustan, Babur Nama: journal of emperor Babur, New York: Penguin Books, pp. 35-87

बात नहीं है। यह प्रवृत्ति मुगलों से लेकर मंगोलों तक चली। बाबर की माँ, कुतलुग निगार खानम, एक उच्च शिक्षित महिला और चंगेज खान की वंशज थीं। कुतलुघ निगार खानम और उनकी मां, ऐसन दौलत बेगम, दोनों फारसी थीं, उनका उनकी बुद्धि पर बड़ा प्रभाव पड़ा।[4] गुलबदन बेगम को अपने पिता की प्रतिभा विरासत में मिली थी और वह तुर्की और फ़ारसी में अत्यधिक निपुण थी। उन्होंने हुमायुनामा को कुशलतापूर्वक लिखा और आज के इतिहासकारों की अतीत की महिलाओं के जीवन को एक साथ रखने की अनुमति दी। वह उस समय के एक बहुत ही खास पहलू, एक महिला के अनुभवों का वर्णन करती है। शक्ति खेलती है और भावनाएँ, काव्यात्मक भाषा इन सबको एक साथ जोड़ती है। उन्होंने अपने अनुभवों को इतिहास में बदल दिया और इसके माध्यम से खुद को अमर कर लिया। उन्होंने हुमायूंनामा को सरल फ़ारसी में लिखा, जो उस समय काफी असामान्य था। हालाँकि, आज भी ऐसा हो रहा है कि उनके काम को उस समय के अन्य कार्यों जैसे आइन-ए-अकबरी और अकबरनामा (कटारिया, 2022) के सहायक के रूप में माना जाता है। हमारे पास गुलबदन बेगम के संस्मरण भी हैं, जहां वह महिलाओं के नाटकीय जीवन और कई बेगमों को मित्रता और पारिवारिक संबंधों में मिली सांत्वना के बारे में लिखती हैं

मुगल हरम

मुगल हरम शब्द रहस्यमयी भव्यता में सुंदर आकृतियों को समेटे हुए एक एकांत स्थान की कल्पना को जन्म देता है.... [टी] युवा लड़कियों को महल (महल में उन सभी समारोहों में शामिल नहीं किया जाता था जिनमें यौन तांडव का बोलबाला था या मास्टर ने अवसरों पर सुंदरता और प्रेम का सौदा किया। स्वाभाविक रूप से, प्रत्येक परिणामी महिला ने मालिक के अविभाजित प्यार को जीतने की कोशिश की और हरम में प्रभुत्व हासिल करने के लिए खुले तौर पर प्रतिस्पर्धा की। महिलाओं की सुंदरता ने उन्हें अपरिभाषित और अद्वितीय शक्ति प्रदान की... अन्य तनाव भी थे, हालांकि प्रभाव इतना गहरा नहीं था। मुख्य रूप से कामुक आनंद के एक कच्चे सिद्धांत पर आधारित है जो शाही महिलाओं के निजी जीवन को विनियमित करने वाला था और पुरुष जॉन एफ रिचर्डस की द मुगल एम्पायर (1993) की न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया श्रृंखला में मुगलों पर खंड में हरम पर एकल वाक्य इस छवि को पुनः प्रस्तुत करता है: "आदर्श रूप से, हरम ने एक राहत प्रदान की, एक वापसी प्रदान की। रईस और उसके निकटतम पुरुष रिश्तेदार-घर के पुरुषों को तरोताजा करने के लिए अनुग्रह, सुंदरता और व्यवस्था का एक आश्रय स्थल बनाया गया है।" इसे आर. नाथ की प्राइवेट लाइफ ऑफ द मुगल्स (1994) में उनके वर्णन में फिर से दोहराया गया है। उदाहरण के लिए, नाथ की दृष्टि में सम्राट जहांगीर "एक कामुक व्यक्ति था, जो शराब और शबाब दोनों का अत्यधिक सेवन करता था।[5]

गुलबदन बेगम और हुमायूंनामा

बाबर ने 1526 में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराकर हिंदुस्तान में एक क्षेत्रीय आधार हासिल कर लिया। इस प्रकार उन्होंने भारत में मुगल शासन की नींव रखी। बाबर के बेटे नासिर अल-दीन हुमायूँ (1508-1556) को भारत में अपने पिता की विजय को बरकरार रखने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके शासन को सबसे बड़ी चुनौती शेर खान सूर से मिली, जिन्होंने पूर्वी भारत में दक्षिणी बिहार पर शासन किया था। 1540 में कनौज के पास शेर खान से पराजित होने के बाद, हुमायूँ फारस और अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों में निर्वासित हो गया। हालाँकि, 1554 में, उन्होंने अपनी सेना का नेतृत्व किया और एक विजयी लड़ाई लड़ी और मुगल राजशाही को बहाल किया। जिसे भारत का मुगल साम्राज्य कहा जाता है। वह अपने पूरे वैभव साथ हुमायूँ के पुत्र जलाल अल-दीन मुहम्मद अकबर (1542-1605) के समय में ही सुरक्षित रूप से स्थापित हो सका। गुलबदन बानू बेगम बाबर की बेटी, हुमायूँ की बहन और अकबर की चाची थीं। उनका जन्म 1523 में अफगानिस्तान में हुआ था और बाबर द्वारा उस क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण विजय प्राप्त करने के बाद, छह साल की उम्र में उन्होंने हिंदुस्तान (आगरा) की यात्रा की थी। उनकी मां दिलदार बेगम थीं, लेकिन बाबर की वरिष्ठ पत्नी महम बेगम ने उनका कार्यभार संभाला। जैसा कि उनके संस्मरण से पता चलता है, गुलबदन ने बाबर और हुमायूँ के शासनकाल की शुरुआती उथल-पुथल देखी थी। ऐसा लगता है कि उन्होंने और उनके पति, खिज्र ख्वाजेह खान ने अपना अधिकांश समय उस स्थान पर घूमने में बिताया था, जिसे उनके परिधीय मुगल परिवार के घर के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार गुलबदन मुगल राजशाही के निर्माण का करीबी गवाह थी, जिसने मुगल साम्राज्य की स्थापना से लेकर अकबर के शासनकाल में इसके स्थापित वैभव तक कई उतार-चढ़ाव देखे। वह अपने भतीजे अकबर के कहने पर इस सब के बारे में लिखने आई थीं, जिसके मुगल सत्ता को मजबूत करने और संस्थागत बनाने के प्रयासों में यह आदेश शामिल था कि उसके शुरुआती चरणों और उसके शासनकाल का एक व्यापक और आधिकारिक इतिहास लिखा जाए।[6]

तुर्की गुलबदन की मूल भाषा थी, और फारसी पांडुलिपि में कई तुर्की शब्द पाए जा सकते हैं। फिर भी हम नहीं जानते कि उसने तुर्की और फारसी दोनों में लिखा था या नहीं। हुमायूँ के समय से ही मुगल दरबार में फारसी का प्रभाव स्पष्ट रूप से बढ़ गया था। गुलबदन

[4] Yasmin, Angbin.(2012). LITERACY AND LITERATURE — STUDY OF ATTAINMENTS OF WOMEN IN MUGHAL INDIA, Proceedings of the Indian History Congress , 2012, Vol. 73 (2012), pp. 391-399

[5] R. Nath, Private Life of the Mughals (1526- 1803), p. 10-18

[6] Gulbadan Begum, Humayun-Nama, tr. A.S.Beveridge, Low Price Publication, 2006, p.1- 121

बानू बेगम, उनकी बहन, इस परिवेश में पली-बढ़ीं और उन्होंने यह भाषा सीख ली होगी, यह लगभग तय है। जब उन्होंने अपना संस्मरण लिखा, तब तक फ़ारसी को सभी स्तरों पर प्रशासन की भाषा घोषित किया जा चुका था। जैसा कि मुजफ्फर आलम कहते हैं, यह राजा, शाही घराने और उच्च मुगल अभिजात वर्ग की भाषा के रूप में उभरी थी। उस समय का एक संस्मरण लिखने के लिए गुलबदन बेगम का नामांकन, साथ ही उनके लिए जिम्मेदार फ़ारसी कविता, उनके सीखे हुए व्यक्ति के रूप में खड़े होने का संकेत देती है। गुलबदन ने राजाओं के कुछ समकालीन संस्मरण और इतिहास पढ़े, जिनमें उनके पिता का संस्मरण भी शामिल था, लेकिन बाबरनामा स्पष्ट रूप से उनके अहवल के लिए साहित्यिक मॉडल नहीं था। एनेट बेवरिज हमें बताती हैं कि बेगम के पास बयाज़िद बयात की तज़किरेह-ए हुमायूँ वा की एक प्रति थी। उसे ख्वांदामीर की क़ानून-ए-हुमायुनी की एक प्रति मिली जिस पर बेगम का नाम अंकित था, फिर भी गुलबदन ने इनमें से किसी भी वृत्तांत की शैली की नकल नहीं की, जो किसी भी मामले में उसके अपने समकालीन थे और शायद उपलब्ध नहीं थे।[7] उनके लेखन के समय अहवल-ए हुमायूँ बादशाह को किसी मान्यता प्राप्त शैली से संबंधित खुले पाठ के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। गुलबदन ने बाबर और हुमायूँ के जीवन में कहीं अधिक मामूली घटनाओं का विवरण तैयार करने के लिए इस शैली से दूर चले गए। विषम परिस्थितियों में इस शाही परिवार के रोजमर्रा के जीवन का उनका विवरण लेखन का एक अनूठा नमूना है। अहवल की सामग्री और संगठन का संक्षिप्त विवरण भी इस बात को स्पष्ट करता है। संस्मरण की बची हुई प्रति दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में गुलबदन अपने पिता बाबर के जीवन काल की चर्चा करती है। इसमें बाबर के संस्मरण, उसके भ्रमणशील जीवन, उस समय के युद्धों और जीतों तथा हिंदुस्तान में मुगल शासन की स्थापना के शुरुआती वर्षों के बारे में काफी हद तक विवरण शामिल है। हालाँकि, बेगम के संस्मरण की विशिष्टता उन छवियों में पाई जाती है जो वह अपने पिता के घरेलू जीवन की प्रदान करती हैं। उनके विवाह, उनकी पत्नियों, बच्चों और उनके रिश्तेदारों और रिश्तेदारों के साथ उनके संबंधों के बारे में व्यापक जानकारी, विशेष रूप से मुग़ल वंश की वरिष्ठ महिलाएँ। यह संस्मरण न केवल घरेलू जीवन के इस दुर्लभ विवरण के लिए उल्लेखनीय है, बल्कि उस जटिलता के लिए भी है जिसे लेखक उन प्रसंगों में सामने लाता है जिनकी चर्चा उस समय के अन्य इतिहासों में की गई है।[8]

गुलबदन के संस्मरण का दूसरा भाग उन्नीसवें फोलियो पर उसके भाई हुमायूँ के शासनकाल से शुरू होता है। यहां भी, राजा के अभियानों और हिंदुस्तान की पुनर्विजय की चर्चा के साथ-साथ, संस्मरण अन्य प्रकार की आकर्षक जानकारी प्रदान करता है। हम युद्धों के दौरान खोई हुई मुगल महिलाओं के बारे में सीखते हैं, साथ ही हुमायूँ और उसकी पत्नी हमीदेह बानो बेगम के भ्रमणशील जीवन की कठिन परिस्थितियों में अकबर के जन्म के बारे में भी सीखते हैं। गुलबदन के रिकॉर्ड में शाही महिलाओं की अभिव्यक्तियां बताई गई है कि उन्हें कैसे शादी करनी चाहिए। उन्होंने हुमायूँ द्वारा परिवार की वरिष्ठ महिलाओं से बार-बार मिलने और इन लगातार यात्राओं के कारण उनके और उनकी पत्नियों के बीच पैदा हुए तनाव का भी विस्तार से वर्णन किया है। गुलबदन द्वारा विवाह, प्रसव, गोद लेने और मृत्यु के क्षणों में कई मुगल महिलाओं की भागीदारी का पर्याप्त उपचार दावतों के जश्न में, और रणनीति और योजना के समय में प्रारंभिक मुगल साम्राज्य के गठन की प्रक्रियाओं से जुड़े लोगों और प्रथाओं के जटिल जाल की ओर इशारा करता है।[9] उनके संस्मरण में, हम निषिद्ध भावनाओं, पदानुक्रमित लेकिन अंतरंग संबंधों और शाही शक्ति के तर्क के विपरीत कार्यों के बारे में सुनते हैं।

जहाँआरा

शाहजहाँ के साथ, आधिकारिक इतिहास में राजकुमारों के साथ-साथ राजकुमारियों को दिए जाने वाले उपहारों और विशेषाधिकारों का विवरण देना शुरू हो गया, जो पहले नहीं था। इतिहासकार इस बात के बारे में विस्तार से बताते हैं कि जहाँआरा को क्या दिया गया था और उसने सम्राट और अन्य लोगों को उपहार में क्या दिया था। जहाँ मुमताज महल शाहजहाँ के राज्यारोहण के साथ प्रमुख महिला बन गईं, वहीं उनकी सबसे बड़ी बेटी जहाँआरा (लगभग 14 वर्ष की उम्र) दूसरे स्थान पर आ गई। जिस तरह से जहांआरा की वसीयत का उल्लेख विशेष रूप से उनके विशिष्ट शीर्षक बेगम साहब के साथ-साथ मुमताज महल के साथ किया गया था, वह आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। उनके अन्य बच्चे, शुरुआती वर्षों में. ज्यादातर एक साथ ही रहते थे। उदाहरण के लिए, विलय के समय, जहाँआरा को एक लाख अशर्फी और चार लाख रुपये दिए गए, जबकि अन्य बच्चों को मिलाकर छह लाख (दारा शुकोह, सबसे बड़े बेटे का हिस्सा दो लाख) मिले। इसी तरह, पहले नौरोज समारोह में, जब जहाँआरा को 25 लाख रुपये के समान मिले, तो सभी राजकुमारों और राजकुमारियों को संयुक्त रूप से 25 लाख रुपये की राशि मिली।[10]

मुमताज महल की मृत्यु (1631) के साथ, जहांआरा स्वचालित रूप से हरम की प्रमुख महिला बन गई। मृत रानी की संपत्ति का आधा हिस्सा (एक करोड़ की राशि) जहां आरा को हस्तांतरित कर दिया गया, अन्य सभी भाई- बहनों ने बाकी आधा हिस्सा साझा

[7] Annette Susannah Beveridge, "Life and Writings of Gulbadan Begam (Lady Rosebody)," Calcutta Review 106 (1892): 346-47
[8] Gulbadan Begum, Humayun-Nama, tr. A.S.Beveridge, Low Price Publication, 2006, p.1- 80
[9] Ibid.,81-170
[10] Bano, S. Jahan Ara's Administration of Her Jagirs (2005-2006), Indian History Congress. Vol 66, pp. 430-437

किया। जहाँ आरा के पास काशीनिर में जागीरें थीं। सितंबर 1634 तक दिल्ली के निकट साहिबाबाद पहले से ही उनकी सरकार में था, जब शाही शिविर ने उस स्थान का दौरा किया। दरअसल, इस जगह को यह नाम बेगम साहब जहां आरा की संपत्ति बनने पर मिला। उनकी स्थापना में कई उद्यान शामिल थे। लाहोरी से हमें पता चलता है कि आगरा में जमुना नदी के तट पर, अंबाला (पंजाब) में बाग और सिफापुर (पंजाब) में बाग आदि का रखरखाव उसने संबंधित परगनों के राजस्व से किया था, जिससे उसकी जागीर बनती थी। उदाहरणार्थ, अम्बाला के बाग के साथ अम्बाला का परगना जुड़ा हुआ था। 1650 में, जहाँ आरा को पानीपत का परगना प्राप्त हुआ, जिससे वार्षिक राजस्व प्राप्त होता था। बादशाह ने स्वयं जहाँ आरा की जागीरों में काफी रुचि ली। साहिबाबाद में उसने अपने शासनकाल के आरंभ में ही एक नहर खुदवा दी थी। फिर 1640 में उस स्थान पर उन्होंने जहांगीर द्वारा कराये गये कुछ निर्माण हटवाये और उनके स्थान पर बंगले और हवेली, जलाशय और झरने आदि बनवाये। 1644 में जहां आरा साहेबी को जेद्दा भेजना चाहती थी, जब गंजावर (अब शाही प्रतिष्ठान से जुड़ा हुआ) भी जेद्दा जा रहा था। शाहजहाँ ने, व्यापारियों की सलाह पर चलते हुए कि दो जहाजों का माल जेद्दा में नहीं बेचा जा सकता है, निर्देश दिया साहेबी से मोखा और गंजवार से जेद्दा तक, इस प्रकार दोनों जहाजों के लिए लाभदायक व्यवसाय की अनुमति मिली।[11]

यह शाहजहाँ का फरमान था, जिसने वर्ष 1646 की शुरुआत में जहाँ आरा की जागीरों में एक समस्या को प्रकाश में लाया। सरकार बरोच के किसान सरकार बरोच, बड़ौदा आदि में अन्य स्थानों पर भाग गए थे। सूबा अहमदाबाद की और वहीं बस गयीं, जिससे उनके महलों की आय में हानि हुई। यह आदेश दिया गया कि सरकार सूरत और बरोच के सभी किसान, जो महारानी की जागीर से संबंधित हैं, जो इस फरमान के जारी होने से पहले पांच वर्षों के भीतर वहां रह रहे हैं, उन्हें आश्वासन दिया जाना चाहिए और महारानी की स्थापना के अधिकारियों को सौंप दिया जाना चाहिए। ताकि वे उन्हें वापस जाकर अपने मूल स्थानों पर बसने के लिए प्रोत्साहित कर सके। मामलों के शीर्ष पर होने के नाते, जहाँ आरा ने हरम की पहली महिला के विशेषाधिकारों का आनंद लिया था, एक ऐसा पद जो पहले किसी शाही बेटी ने हासिल नहीं किया था और उसने राजसी अपेक्षाओं को बनाए रखने की कोशिश की थी।[12]

जीजाबाई

1596 में जन्मी, उनकी शादी 1610 में शाहजी से हुई थी। उनका प्रारंभिक जीवन उतार-चढ़ाव से भरा था। उसने अपने पिता और पति को विभिन्न उद्देश्यों के लिए काम करते देखा था और कई मौकों पर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक सैन्य मार्च में भाग लेना पड़ता था। जब शिवाजी का जन्म हुआ तब वह एक परिपक्व निर्णय वाली महिला थीं और शिवाजी के वयस्क होने और अपनी गतिविधियाँ शुरू करने से पहले ही, उन्हें पूना में जहाँगीर प्रशासन की समस्याओं से परिचित होने का अवसर मिला था। जब शिवाजी ने स्वतंत्र रूप से अपनी गतिविधियाँ शुरू कीं, मान लीजिए 1647 से, यानी दादाजी कोंडदेव की मृत्यु के बाद, वह 50 वर्ष से अधिक की थीं। कोई भी कल्पना कर सकता है कि इनके बीच कैसा रिश्ता रहा होगा। बूढ़ी माँ और उसका जवान बेटा। शिवाजी लगातार सैन्य गतिविधियों में लगे रहते थे और उनके पास सावधानीपूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता वाले कई मामलों को निपटाने के लिए बहुत कम समय था। वह अपनी माँ के अलावा किस पर भरोसा कर सकता था जिसकी स्नेहमय देखभाल के तहत वह दूरदर्शी और समझदार युवा बन गया था। अब तक प्रकाशित मूल कागजात, केवल इस वैध अनुमान की पुष्टि करते हैं कि जीजाबाई ने प्रशासन के काम में शिवाजी की बहुत मदद की होगी।[13]

(1) 1651 ई. जीजाबाई ने पूना के अधिकारियों को लिखा कि वेहेरवाडे (बेहरवाडे) की भूमि का इनाम एक गानों गबाजी ताबीब के लिए नवीनीकृत कर दिया गया है और अधिकारियों को किसी अन्य पत्र की प्रतीक्षा या अपेक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। चिरंजीव राजे यानी शिवाजी, जिसका प्रतिरूप बी.आई.एस. में प्रकाशित हुआ है। मंडल त्रैमासिक 1920 की शुरुआत में। 'अधिकारियों को शिवाजी के एक और पत्र की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। शब्द वास्तव में उन शक्तियों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो उन्होंने ग्रहण की थीं या उन्हें सौंपी गई थीं।

(2) जेजुरी मंदिर में प्रतिद्वंद्वी उपासकों के बीच झगड़े में लेखक कहता है कि हमारा विवाद शिवाजी तक पहुंच गया, जिस पर जीजाबाई ने पूछा- संभवतः शिवाजी अनुपस्थित रहे होंगे, आपका झगड़ा किस बारे में है? तब झगड़े का कारण बताया गया। इस पर जीजाबाई ने गुरव यानी मंदिर के पुजारी से कहा चूंकि आप कपड़े के पांच टुकड़ों का दावा करते हैं और दावा विवाद में है, आप उन्हें वर्तमान के लिए राजकोष में वापस कर दें और कपड़े के शेष तीन टुकड़ों को आप, वतन के तीन सहदायिकों द्वारा समान रूप से लिया जा सकता है। यहां जीजाबाई केवल विवाद के बिंदु को अस्थायी रूप से स्थगित न करके रही, इसके अंतिम निर्णय को स्थगित कर रही हैं।

[11] Ibid., 430-437
[12] Ibid., 430-437
[13] R. V. Oturkar,(1958), Part Played Jijabai, The Mother of Shivaji in the Foundation of The Maratha State, Indian History Congress, vol 21, pp. 361-364

(3) पुरंधर पर कब्जा करते समय, शिवाजी दिवाली मनाने के लिए जीजाबाई के साथ किले में गए और फिर जैसा कि पुरंधर पर अचानक कब्ज़ा करने के लिए समझा जाता है, पहले नीलोजीराव को कैद किया और फिर शंकरराव सरनाईक को पकड़ लिया, जिनकी मध्यस्थता से शिवाजी किले में गए थे। यह घटना वर्ष 1674 के एक पेपर में वर्णित है. लेकिन वर्ष 1647 के आसपास घटी होगी।

(4) वर्ष 1668 में जीजाबाई ने गुंजन मावल के विठोजी हैबतराव देशमुख को लिखे एक पत्र में बताया गया है कि हैबतराव अपने जीवन के खतरे के डर से कहीं चले गए हैं। ऐसा करने से पहले उन्होंने मोरोपंत पेशवा को सूचित किया था कि चूंकि वह क्षेत्र (देशगत जैसा कि इसे कहा जाता है) के अपने प्रशासनिक कर्तव्यों को पूरा करने की स्थिति में नहीं हैं। इसलिए वह अपने कर्तव्यों के प्रदर्शन के लिए अपने मुतालिक यानी प्रतिनिधि को नामित करेंगे। जीजाबाई आगे लिखती हैं, चूंकि पत्र प्राप्त हो गया है, इसलिए मैं यहां एक आश्वासन पत्र भेज रही हूं कि मुतालिक को समय-समय पर देशगत कार्य करने की अनुमति दी जाएगी और आपकी विशेषाधिकार प्राप्त सेवाओं का बकाया आपको सौंपा जाएगा। सरकार आपकी हर खुशी की कामना करती है और आपको केंद्रीय सत्ता के हाथों किसी भी तरह के नुकसान से डरने की जरूरत नहीं है। इस दृष्टांत से पता चलेगा कि जीजाबाई ने न केवल न्यायिक समस्याओं को संभाला बल्कि कार्यकारी कर्तव्यों में भी भाग लिया, विशेष रूप से उन मामलों में जहां समाधान बनाना और विश्वास बहाल करना है। एक नई उभरती हुई शक्ति को उन लोगों को जीतना, मजबूत करना और उनमें विश्वास पैदा करना है जो असहज मन के साथ खुद को नए शासन में समायोजित करने की कोशिश कर रहे हैं। जीजाबाई अपने वर्षों के स्त्रैण गुणों और गरिमापूर्ण व्यवहार के कारण इस कार्य को करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त थीं, जो शिवाजी द्वारा किए गए कार्य का पूरक था।[14]

वर्ष 1668 के एक पत्र में जीजाबाई ने बाबाजी रामदेश कुलकर्णी, परगने पूना को लिखा: खबर है कि आप किसी मुकुंद कान्होजी की भूमि की सीमाओं और सीमाओं के बारे में परेशानी उठा रहे है..... आगे प्रकृति का वर्णन किया है जैसा कि उन्हें बताया गया था, जीजाबाई ने चेतावनी दी, यदि आप इस तरह से अनावश्यक परेशानी पैदा करते हैं, तो आपको अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि चिरंजीव (यानी शिवाजी) अपने कर्तव्य के प्रदर्शन में कोई व्यक्तिगत विचार नहीं करेंगे और बदमाश को सजा देंगे। इसे अच्छी तरह से जानें और कोई अनावश्यक परेशानी न पैदा करें। बाबाजी रामदेश संभवतः एक बुजुर्ग व्यक्ति रहे होंगे और एक ब्राह्मण भी थे जिनके साथ आमतौर पर उस युग के मानकों के अनुसार विचार किया जाता था। जीजाबाई चेतावनी देना चाहती थीं कि न तो उम्र, न ही जाति, न ही गरिमा गलत काम करने वाले को दंडित करने और न्याय लागू करने के रास्ते में आड़े आएगी।

वैधानिकता के स्त्रोत के रूप में सिख महिलाओं की भूमिका

सिख धर्म विश्व के सबसे युवा धर्मों में से एक है। यह गुरु-सिख [शिक्षक-शिष्य] रिश्ते पर केंद्रित है, जिसे पवित्र माना जाता है। सिख धर्म का विकास एक सामाजिक-धार्मिक आंदोलन की एक उल्लेखनीय कहानी है जो दस मानव गुरुओं के नेतृत्व में पंजाब में एक सुसंगठित शक्ति के रूप में विकसित हुआ। उत्तरी भारत में अवधारित इस विश्वास प्रणाली ने मध्ययुगीन युग के संदर्भ में सार्वभौमिकता, उदारवाद, मानवतावाद और बहुलवाद के मूल्यों का प्रचार और प्रसार किया। इसकी शिक्षाएँ गुरु नानक (1469-1539 ई.) द्वारा प्रकट की गईं, जिनके बाद नौ अन्य गुरु आए। उनकी शिक्षाएँ sवें गुरु श्री गुरु अर्जन देव द्वारा संकलित आदि ग्रंथ में सन्निहित हैं। अंतिम गुरु, गुरु गोबिंद सिंह (1666-1708 ई.) ने श्री गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को जोड़ा और इस पवित्र ग्रंथ को 'गुरुत्व' प्रदान किया, जिसे अब गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में जाना जाता है और इसे शाश्वत जीवित गुरु के रूप में सम्मानित किया जाता है। 31 रागों में भजन और भारतीय उपमहाद्वीप की लंबाई और चौड़ाई से सिख गुरुओं, हिंदू संतों और मुस्लिम देवताओं के लेखन का प्रतिनिधित्व करते हुए, गुरु ग्रंथ आध्यात्मिकता का प्रतीक है। अत्याचारः मुगल शासन, विदेशी आक्रमणकारी और जाति विचारधारा के समर्थक। यह केवल अकेली माई भागो नहीं थी। कई अन्य सिख महिलाएं भी खालसा रैंक में शामिल हुईं। गुरु गोबिंद सिंह ने महिलाओं और पुरुषों दोनों को कृपाण का विशेषाधिकार दिया। महिलाओं ने शीघ्र ही प्रदर्शित कर दिया कि वे आध्यात्मिकता और तलवार चलाने में पुरुषों के बराबर हैं।[15]

महिलाओं की भूमिका को समझने के लिए हमें सबसे पहले उन बुनियादी अधिकारों पर गौर करना होगा, जो सिख धर्म के सिद्धांत महिलाओं को प्रदान करते हैं। यह महिलाओं को मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार देता है, ईश्वर की प्राप्ति जो कि सर्वोच्च आध्यात्मिक लक्ष्य है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है कि भगवान सभी प्राणियों में व्यापक है. भगवान सभी नर और मादा रूपों में व्याप्त

[14] Ibid., 361-364
[15] Trilochan Singh. Guru Tegh Bahadur: Prophet or Martyr, GURDWARA PARBANDHAK COMMITTEE, SIS GANJ, Chandni chowk, Delhi, pp. 1-90

हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि ईश्वर का प्रकाश दोनों लिंगों पर समान रूप से रहता है और महिला को पुरुष की आध्यात्मिकता के लिए हीन या बाधा नहीं माना जाता है।[16]

बीबी नानकी

गुरु नानक देव की बड़ी बहन बीबी नानकी अत्यधिक बुद्धिमान, समझदार और धर्मपरायण थीं। यह वह महिला थी जिसने अपने भाई में दिव्य प्रकाश को पहचाना और किसी और के समझने से पहले ही उसके जीवन के मिशन की कल्पना कर ली। वह उससे सिर्फ एक भाई की तरह व्यवहार नहीं करती थी; वह उनका गुरु के समान आदर करती थीं। उन्होंने गुरु नानक के क्रांतिकारी आदर्शों का समर्थन किया क्योंकि उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि वह लोगों को गलत धारणाओं और अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने के लिए आए थे।

माता खिवी

सिख धर्म में अगली प्रमुख महिला माता खिवी हैं, जो दूसरे गुरु, गुरु अंगद देव की पत्नी हैं। वह दिन-रात लंगर (सामुदायिक रसोई) में प्रेमपूर्वक काम करती थी और अपने हाथों से भोजन परोसने का आनंद लेती थी। उनकी निस्वार्थ सेवा के कारण कई लोग गुरु के मार्ग को स्वीकार करने के लिए प्रेरित हुए। उनका नाम आदि ग्रंथ में पृष्ठ 967 पर आता है।

बीबी भानी

गुरु अगर दास की बेटी बीबी भानी ने समर्पण के साथ अपने पिता की सेवा की और अपने पति गुरु राम दास के लिए शक्ति का स्तंभ थीं। उन्होंने अपने पुत्र पांचवें गुरु, गुरु अर्जुन देव को सुंदर शब्दों में आशीर्वाद दिया जो आदि ग्रंथ के पृष्ठ 496 पर दर्ज हैं।

सरदारनी सदा कौर

सरदारनी सदा कौर पंजाब में सिख साम्राज्य की वास्तविक निर्माता थीं। उन्हें महाराजा रणजीत सिंह की सास. मेहताब कौर की मां के रूप में जाना जाता है। वह बुद्धि और विवेक से सुसज्जित एक बहादुर महिला थीं। वह महाराजा रणजीत सिंह के पीछे का मस्तिष्क और शक्ति थी। आदि-ग्रंथ का पुनर्मूल्यांकनः समकालीन नारीवादी लेंस के माध्यम से इस पवित्र पुस्तक की समीक्षा भारत का लंबा और विस्तृत इतिहास प्रबुद्ध महिलाओं से भरा पड़ा है जो सुसंस्कृत और शिक्षित थीं और उन्होंने कई गतिविधियों में अपनी प्रतिभा बिखेरी। हर बार जब हम उनसे प्रार्थना करते हैं या उनके बारे में सोचते हैं तो वे हमारे लिए भावना के कई उपहार लाते हैं, वे हमें अपनी रचनात्मकता, खुशी, आशा और कूटनीति से प्रेरित करते हैं।

माता गुर्जरी

माता गुजरी ने सूबा का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया और सभी मसंदों को पत्र लिखे। जबकि धार्मिक राजधानी का नैतिक और आध्यात्मिक प्रशासन स्वयं गुरु गोबिंद सिंह द्वारा नियंत्रित किया जाता था, माता गुजरी, उनके भाई किरपाल, भाई जेठा, भाई मणि सिंह और सांगो शाह से सभी मामलों में उनके द्वारा परामर्श किया जाता था।

जब गुरु तेग बहादुर ने उत्तर भारत में हिंदू धर्म को पूरी तरह से खत्म होने से रोकने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया, तो उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उनका बेटा हिमालय पर्वतमाला के हिंदू राजाओं के आक्रामक हमलों का शिकार बन जाएगा। बार-बार उन्होंने अपनी सामूहिक शक्ति से युवा गुरु पर हमला किया और भयानक हार का सामना करना पड़ा। सभी पहाड़ी सरदारों को करारी हार देने के बाद भी, गुरु गोबिंद सिंह ने उनके क्षेत्र का एक इंच भी कब्जा नहीं किया। वह आसानी से 21 साल की उम्र में हिमालय रेंज में कम से कम छह शिवालिक राज्यों का शासक बन सकता था और दक्षिण में शिवाजी की तुलना में उत्तर भारत में अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित था। तब अजमेर चंद के नेतृत्व में सभी प्रमुख राजाओं ने व्यक्तिगत रूप से सम्राट से मुलाकात की, उनके दिमाग में जहर डाला और गुरु गोबिंद सिंह की जड़ और शाखा को नष्ट करने का आदेश प्राप्त किया। आनंदपुर के चारों ओर घेराबंदी कर दी गई, जिसमें नाहन के राजा को छोड़कर सभी हिंदू राजाओं ने प्रमुख मुगल जनरलों के नेतृत्व वाली शाही सेना से हाथ मिला लिया। गुरु गोबिंद सिंह ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया और उन्हें हराना असंभव हो गया। तब औरंगजेब ने अपने एक काजी के साथ पवित्र कुरान पर हस्ताक्षरित एक शपथ पत्र भेजा, जिसमें गुरु गोबिंद सिंह को आश्वासन दिया गया था कि उन्हें

[16] Nikky-Guninder Kaur Singh, The Feminine Principle in the Sikh Vision of the Transcendent, Cambridge Studies in Religious Traditions, Publisher: Cambridge University Press 1993, pp. 10-20

नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा। लेकिन जैसे ही गुरु और उनकी सेना किले से बाहर निकले, उन पर चारों तरफ से मुगल सेनाओं और शिवालिक के राजाओं ने हमला कर दिया।[17]

गंगू नामक एक ब्राह्मण नौकर ने माता गुजरी और उनके दो पोतों को अपने गांव में ले गया जहां उसने उन्हें सरहिंद के गवर्नर नवाब वज़ीर खान को धोखा दिया। गुरु गोबिंद सिंह के दो पुत्र चमकौर की लड़ाई में लड़ते हुए मारे गए और अन्य दो जो माता गुजरी के साथ थे, उन्हें जेल में डाल दिया गया, यातना दी गई, धमकाया गया और जबरन इस्लाम स्वीकार करने का आग्रह किया गया। लेकिन 7 और 9 वर्ष की आयु के युवा लड़कों ने अपना विश्वास छोड़ने या डर से डरने से इनकार कर दिया। उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई और वहीं, वजीर खान की जेल में अकथनीय कष्ट और यातनाएं झेलने के बाद माता गुजरी की मृत्यु हो गई।[18]

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तोर पर सभी मराठी, मुगल, सिख महिलाओं ने 16वीं से 18वीं सदी के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सभी मराठी, मुगल एवं सिख महिलाओं ने प्रशासन मामलों में भी अपनी भूमिका को दिखाया है। मुगल महिलाओं की स्थिति को आकार देने वाला एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी आर्थिक भूमिकाएँ थीं। हालाँकि सामाजिक मानदंडों ने महिलाओं को विशिष्ट भूमिकाओं तक सीमित रखा, फिर भी उन्होंने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। महिलाएँ कृषि, व्यापार और शिल्प कौशल में लगी हुई थीं, जो साम्राज्य की समग्र आर्थिक समृद्धि में योगदान दे रही थीं। उनके योगदान ने उनकी एजेंसी का प्रदर्शन किया और समाज में उनकी स्थिति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुगल महिलाओं की स्थिति पर धर्म और सांस्कृतिक प्रथाओं का गहरा प्रभाव पड़ा। मुगल काल के दौरान प्रमुख धर्म इस्लाम ने महिलाओं को कानूनी सुरक्षा प्रदान की, उन्हें संपत्ति के अधिकार, विरासत और वित्तीय लेनदेन में शामिल होने की स्वतंत्रता प्रदान की। जबकि कुछ सांस्कृतिक प्रथाओं, जैसे पर्दा प्रणाली ने एकांत पर जोर दिया, दूसरों ने कला और साहित्य के संरक्षक के रूप में महिलाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। मुगल दरबारों में प्रभावशाली महिला शख्सियतें देखी गईं जिनके पास काफी सामाजिक और राजनीतिक शक्ति थी, जो धर्म, संस्कृति और की स्थिति के बीच गतिशील संबंधों का एक उदाहरण था।

[17] Trilochan Singh. Guru Tegh Bahadur: Prophet or Martyr, GURDWARA PARBANDHAK COMMITTEE, SIS GANJ, Chandni chowk, Delhi, pp. 330-336

[18] Ibid., 330-336